ॐ

सुखदायक स्तोत्र

प्रकाशकः- दरबार श्री ध्यानपुर
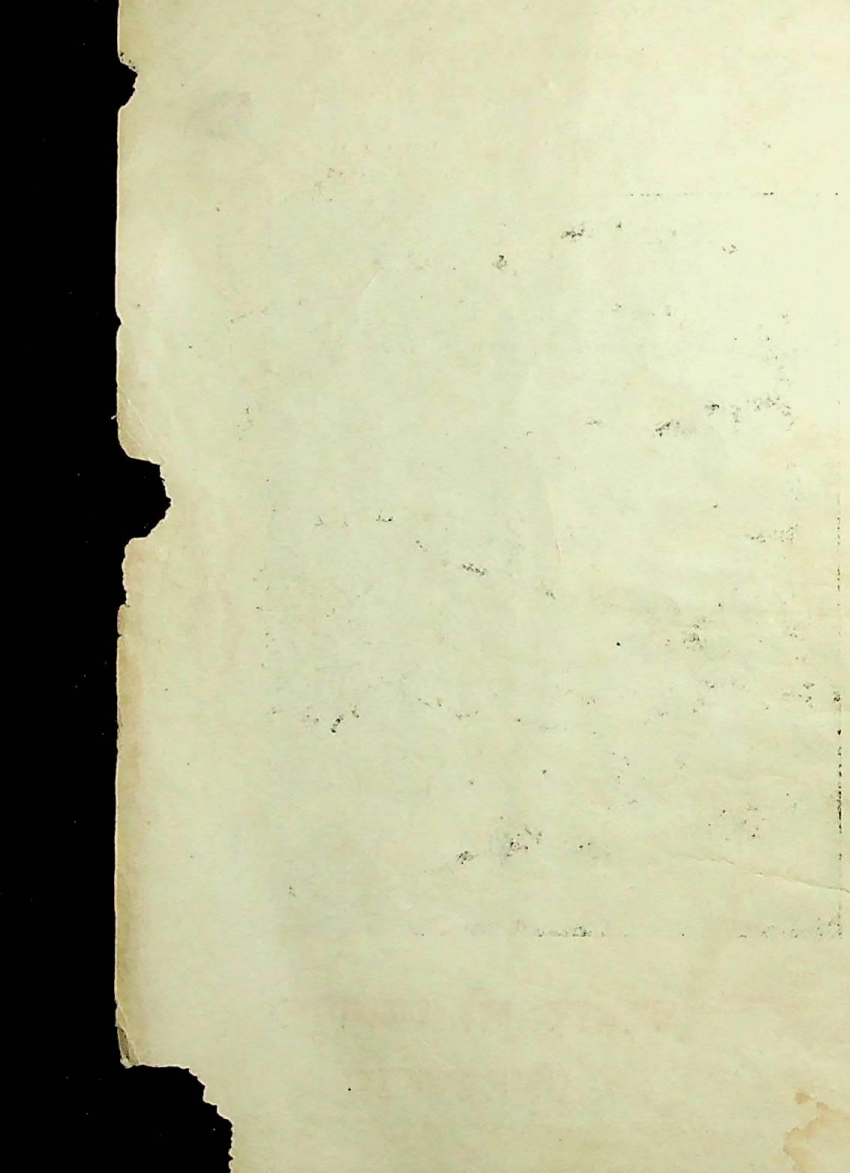
(जिला गुरदासपुर)

सर्वाधिकार सुरक्षित हैं।

चमन मत समझो, लयाकत का यह होता मान है।
लाज अपने नाम की, वह रख रहा भगवान है॥

श्री सुखदायक स्तोत्र

—०—

लेखक :

पं० चमन लाल भारद्वाज 'चमन'

प्रकाशक:

दरबार श्री ध्यानपुर

(ज़िला गुरदासपुर)

प्रकाशक :

दरबार श्री ध्यानपुर
(ज़िला गुरदासपुर)
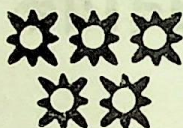
भेंटा : 2-00 रुपए

रामा आर्ट प्रेस,
टऊन हाल,
अमृतसर

नम्र प्रार्थना

श्री १०८ पूज्य महन्त श्री द्वारका दास जी
महाराज की मुझ दास पर अपार कृपा है
जो उन्होंने मुझे प्रेम भरी वानी से आज्ञा
दी कि मैं कुछ शब्द लिखूं। मैं अपने
भागों की कहां तक सराहना करु
जो आपकी कृपा दृष्टि से साहस
कर सका इस स्तोत्र के हर
शब्द से आप की ही कृपा
दृष्टि आ रही है मुझे
पूर्ण आशा है कि आप
दास के औगुणों
को क्षमा करके
सदैव मुझ पर
कृपा करते
रहेंगे।

आपका कृपाभिलाषी :-
चमन लाल भारद्वाज 'चमन'

प्रार्थना

दोहे

आद गणेश मनाये के, गुरू को करूं प्रणाम ।
जो निश्चय कर ध्यावदें, सफल होवे सब काम ।
तूं दाता सब जगत का, सब का पालन हार ।
सतगुरू अपने चरणों का, दीजो सदा प्यार ।
नाम रहे नित मुख में, ध्यान रहे दिन माही ।
प्रेम धनु लागी रहे, टूटे जो कभी नाही ।
इक दयो मोहे सम्पति, दूजो अपना नाम ।
सम्पति सुख संसार का, नाम तुम्हारो धाम ।
नज़र करो ये मेहर की, देवो अपना नाम ।
सुख दिया संसार के, अन्त तूं अपना धाम ।
मैं दीन दयाल, तुम दया करो रघुनाथ ।
मुझ अनाथ गरीब के, सिर पर राखो हाथ ।
दूर करो दुःख दास के, सुनियों वृज के नाथ ।
हाथ जोड़ बेनती करूं, और नवाऊं माथ ।
पापी था पर अब नहीं, जब शरण में आया नाथ।
पाप कहां फिर मुझ में, जब तुम हो हमारे साथ ।
दुःख में शोक न होय, मम् सुख में हर्ष न हो ।
दोनों एक समान हो, वियाप न सके को ।
न मैं करूं न कर सकूं, ना कुछ हमारे हाथ ।
पाप पुण्य दोनों प्रभु, करो करायो आप ।

—o—

जै बाबा लाल जी, जै श्री लाल दयाल जी ।
सच्चे सतगुरु पास जी, जै द्वारका दास जी ।।

सुखदायक स्तोत्र

......

✲ पहिला अध्याय ✲

धन धन बावा लाल जी

आद गणेश मनाय के, शारदा मात धिआऊं ।
बावा लाल दयाल जी. के शुभ गुण को गाऊं ।।
धन धन बावा लाल जी, लाल दयाल कृपाल ।
जिनके सुमरिन से मिटे, कोटि-२ जंजाल ।।
महां पुरुषों की अस्तुति गावे जो दिन रैन ।
सुख सम्पति परिवार के पावें निशदिन चैन ।
बावा लाल दयाल जी थे सतगुरु अवतार ।
करने आये जीवों का भव से बेड़ा पार ।

अद्भुत लीला आपकी मुझ से कही न जाये ।
गुरु देव की कृपा से लीनी कलम उठाये ।

द्वारका दास कृपाल की आज्ञा सर पर धार ।
लिखने लगा हूं भाव कुछ हृदय सोच विचार ।

पूर्ण पारब्रह्म थे लाल दयाल कृपाल ।
अपने दासों को सदा करते रहें निहाल ।

श्रद्धा भक्ति से करे जो भी उनका ध्यान ।
भक्ति, मुक्ति सम्पति मिले नेक सन्तान ।

उजड़े घर बस जाते हैं होवें माला माल ।
जिस पर दृष्टि कृपा की कर दें लाल दयाल ।

कलूकाल में प्रगट है उनकी कला अपार ।
निश्चय करके हृदय में ले जो उनकी धार

रिद्धि सिद्धि आप ही उनके घर में आए ।
जै जै लाल दयाल जी सदा जो मुंह से गाए ।

ध्यान लगाकर चरणों में श्रद्धा प्रेम बढ़ाय
सदा करे उस जीव की लाल दयाल सहाय

बाबा लाल दयाल के प्रेम सहित गुण गाओ ।
'चमन' दया भगवान की सुख और सम्पती पाओ ।

—

☼ दूसरा अध्याय ☼

श्री गुरू महिमा

सतगुरु लाल दयाल जी ब्रह्म रुप अवतार ।
जिनकी दया दृष्टि से दया करे करतार ।
ऐसे गुरु के चरणों में करु कोट प्रणाम ।
जिनके सुमरिन ध्यान से आन मिले श्री राम ।

॥ चौपाई ॥

सतगुरु लाल दयाल गुसांई ।
इन सम पूर्ण गुरु कोई नांई ॥
सतगुरु लेकर नर अवतार ।
आए करने वेड़ा पार ।
निर्मल मन की निर्मल बानी ।
सुन कर समझे ब्रह्म ज्ञानी ।
बैठ इकागर करें विचार ।
गुरु की बानी हृदय धार ।
गृहस्थी हो या साध विरागी ।
सम्पट कामी हो या त्यागी ॥
निसदिन लाल दयाल पुकारे ।
सच्चे मन से निश्चय धारे ।

आंख मूंद कर करे ध्यान ।
कृपा करेंगे जानी जान ।
निसदिन पाठ करो तुम सारा ।
मिट जायेगा कष्ट तुम्हारा ।
प्रेम से इक सौ आठ पाठ पढ़ ।
मन में बावा लाल याद कर ।
श्रद्धा से जब तुम ध्याओगे ।
मुंह मांगा वर पा जाओगे ।
इस पुस्तक का पाठ निराला ।
करता है कोई किस्मत वाला ।
पूरे सत्गुरु लाल दयाल ।
शर्णागत पालक कृपाल ।
निस्तारा पल में कर शर्ण पड़े जो आन ।
सेवक की रक्षा करे सत्गुरु जानी जान ।
ऐसे गुरु की शरणी आओ ।
पाठ करो फल मांगा पाओ ।
महिमा अपरम्पार महान ।
गद्दी ध्यानपुर अस्थान ।
अमृतसर से सड़क बटाला ।
ध्यानपुर का राह निराला ।

लाल दयाल का है दरबार ।
दर्शन से हो बेड़ा पार ।

परम्परा से गुरु निवास ।
जहां विराजे द्वारका दास ।

करनी बावा लाल की जानो ।
पूरी इन के तन में मानो ।

शुद्ध चित्त और शुद्ध ब्यावहार ।
करे नज़र से बेड़ा पार ।

नेम धर्म में पूर्ण साध ।
दर्शन से कटते अपराध ।

हंस मुख मीठी सुन्दर बानी ।
शक्तिमान हैं पूर्ण ज्ञानी ।

किसी बात का मान नहीं है ।
बावा लाल का ध्यान सदा ।

सुखी गुरु सन्तोषी दानी ।
बावा लाल की असली निशानी ।

लाल दयाल का नाम पुकारें ।
करामात को फूंक जो मारे ।

दया दृष्टि सेवक पर कर दें ।
ख़ाली गोदी को भर भी दें ।

कोई न दर से फिरे निरास।
जै सच्चे गुरु द्वारका दास।

...०...

☼ तीसरा अध्याय ☼

जै जै कार मनाय के चरणीं सीस निवाय।
सतगुर जी को ध्याय जो मन वांछत फल पाय।

करो प्रेम से बेनती सतगुर चरणीं मांहि।
लाल दयाल की दया से सभी कष्ट मिट जाये।

थोड़े से ही शब्दों में कर दूं यहां बिखान।
शक्तिशाली गद्दी यह कैसे हुई प्रधान।

भगवत धर्म की जगत में चार हैं सम्प्रदाय।
श्री शैव्य सनकादि और ब्रह्म नाम कहलाए।

श्री सम्प्रदाय के रामानुज अचार्य।
आए मिटाने जगत में भूमि का यह भार।

वैष्णव धर्म स्थापना करने को बेअन्त।
जग में अवतीर्ण हुए देखो शेश अनन्त।

सम्प्रदाय प्रभाव से भक्ति जग आधार।
बड़े बड़े आचार्यों ने लीना था अवतार।
उन्हीं में चैतन्य स्वामी जी हुए सन्त कृपाल।
जिन के शिष्य कहलायें हैं बावा लाल दयाल।
स्वामी शक्तिशाली थे सन्त वह चेतन आप।
जिन्होंने लाल दयाल को दिया नाम का जाप।
उन्हीं लाल दयाल की महिमा लिखूं अपार।
जिनकी दया से भक्त जन होते भव से पार।
जिनकी गद्दी ध्यानपुर सतयुग रही विराज।
आजकल यहां नारायण दास जी हैं महाराज।
करोड़ों ही सेवक करें जिस दरबार का ध्यान।
उसकी साखी थोड़ी सी करने लगा ब्यान।
गलतीयां जो रह जायेगी क्षमा करें कृपाल।
मेरी भूल भुलायेंगे बावा लाल दयाल।
ऐसे पाठ पवित्र को पढ़े जो मन चित लाय।
हर दम लाल दयाल जी उनकी करे सहाय।
सुने सुनाये श्रद्धा से पढ़ कर करें विचार।
निशचय 'चमन' हो जायेगा भव से बेड़ा पार।

कैसे लिखूं व क्या कहूं आते नहीं विचार ।
जब तक लाल दयाल जी करें न बेड़ा पार ।
आज्ञा द्वारका दासजी की मैं सिर पर धार ।
कथा मैं लाल दयाल की लिखूं सहित विस्तार ।
सेवक परम सुजान सब करें प्रेम से पाठ ।
हृदय से देखत रहें सतगुरु जी की वाट ।
मन वांछत फल पाना हो नित करियो ध्यान ।
शक्ति भक्ति पाओगे होवेगा कल्याण ।
निसदिन प्रात: उठते ही मन में निश्चय धार ।
प्रेम सहित गुरु देव को करियो नमस्कार ।

—o-

चौथा अध्याय

(वतर्ज़ -- हरि हरि)

नमस्कार श्री चरणों में सर झुका के ।
करो सारे सतगुर की जय जय बुला के ।
प्रथम सतगुर लाल दयाल को ध्याओ ।
श्री गुरमुख लाल का यश दूजे गाओ ।
दया राम तीजे गुरु गद्दी वाले ।
थे चौथे गुरु गुर्जन जी भोले भाले ।

श्री राम सहाय थे पञ्चम कहलाये ।
छटे लाल दास जी गद्दी पे आये ।
गुरु सातवें सीतल दास निराले ।
थे आठवें नाम हरभजन दास वाले ।
नवम् गुरु थे बलराम बल रुप धारी ।
दसम राघव दास जी हुए अवतारी ।
थे ग्यारवें हरिनाम दास जी प्यारे ।
सुदर्शन जी बारहवें दुनियां से न्यारे ।
गुरु तेरहवें द्वारका दास कहलाये ।
कथन में न महिमा 'चमन' जिनकी आये ।
चौहदवें गुरु नारायण दास निराले ।
पूर्ण सन्त महन्त साधु रुप वाले ।
इन्हीं की तो आज्ञा का पालन किया है ।
सुखदायक स्तोत्र यह लिख दिया है ।

• सवैया •

(1) सभी सेवकों से यही प्रार्थना है,
कि हर दम यही नाम मुख से उचारे ।
जो चाहे की मिट जाये संकट तुम्हारे,
तो श्रद्धा से जय लाल दयाल पुकारे ।

सदा उठते बैठते और चलते फिरते,

गुरुदेव की मूर्ति दिल में धारे।

श्री ध्यानपुर पे निश्चय रख कर,

चमन अपना जीवन हमेशा सुधारे।

(2) जो चाहो कि संकट में दिल ही न डोले,

तो भी लाल दयाल के गुण गाते जाईयो।

सुखदायक अस्तोत्र का पाठ करके,

सदा अपने मन को यह समझाते जाईयो।

की सतगुरु मेरे अंग संग फिर रहे हैं,

न यह बात दिल से चमन तुम भुलाईयो।

करो मेरी रक्षा श्री लाल बावा,

यह कहते हुए सीस हर दम झुकाईयो।

(3) सभी तेरी आशायें होवें गी पूरी,

सिदक से गुरु की शरण में जो आये।

कपट छोड़ कर दिल में रख सच्चा निश्चय,

सुखदायक अस्तोत्र जो मुख से गाये।

श्री लाल दयाल पे रख कर भरोसा,

किये जा तूं दुनियां में जो करना चाहे।

चमन उसको घाटा न दुनियाँ में कोई,

जो सेवक बावा लाल जी का कहलाये।

✡ पांचवां अध्याय ✡

गुरु देव के चरणों में सहजे ध्यान लगाये।
लिख मैं बावा लाल का सुन्दर चरित बनाये।
लाल दयाल की शक्ति से निर्मल होए विचार।
तब ही उनकी महिमा का होगा कुछ विस्तार।
भारत देश में चारों ओर था इसलाम का राज।
मुस्लमानों के हाथ में था सब तख्त और ताज।
भारत में पंजाब है उत्तम देश महान।
उस में शहर कसूर है सरहद पाकिस्तान।
वर्ष पांच सौ पहले की कथा सुनो मन धीर।
शहर कसूर में सतगुरु धारा मनुष शरीर।

(तर्ज-राधे श्याम)

श्री भोला मल पटवारी के हां,
श्री कृष्णा मां की गोद भरी।
श्री लाल दयाल जी जन्म लियो,
मानो प्रगटें भगवान हरि।
वो दूज की आधी रात्रि में,
प्रकाश प्रभु ने दिखलाया।
इक चांद नूरानी स्वर्ग छोड़,

देखो पृथ्वी पे उतर आया ।
दाया ने बच्चे को देखा,
नूरानी चेहरा चमक रहा ।
और सूर्य देव का तेज था,
बच्चे के मस्तक पर दमक रहा ।
यह अद्भुत लीला देख सभी,
आश्चर्य हुए घबराने लगे ।
श्री लाल दयाल जी रोने के,
बदले देखो मुस्काने लगे ।
माँ कृष्णा तो झट समझ गई,
इक नर अकाशी आया है ।
वो ब्रह्म तेज बच्चे के तन में,
सारा आन समाया है ।
तब खुशी से दाया बोल उठी,
यह बच्चा न संसारी है ।
यह ब्रह्म अंश कोई राजा है,
पैगम्बर यां अवतारी है ।
मिलने लगी बधाईयां जन्म लिया जो लाल ,
शुभ मंगल होने लगे आये लाल दयाल ।

—o—

शुभ मंगल गीत

(बतर्ज जरूर कोई बात है पहली मुलाकात है)

घर घर हो रही देखो जै जै कार है।
खुशियां मनांदा पया सारा संसार है।
घर पटवारी भोला मल्ल दे वधाई ए।
शक्ति पारब्रह्म दी जिन्हां दे घर आई ए।
गुरु लाल दयाल जी ने लीता अवतार है।
खुशियां मनांदा पया सारा संसार है।
घर बार छड सारे नर नारी दौड़ पए।
दौड़े दौड़े सब माता कृष्णा दे कोल गए।
हर इक खुश होया पा के दीदार है।
खुशियाँ मनांदा पया सारा संसार है।
सतगुर बावा लाल आए जो जहान विच।
पण्डितां ते जोतषियां देखया ध्यान विच।
आखया ए दुनियां दा सच्चा करतार है।
खुशियाँ मनांदा पया सारा संसार है।
'चमन' ए दुनियां दे विच यश पाएगा।
बच्चे बच्चे कोलों पूजा अपनी कराएगा।
ध्यानपुर ऐसे दा ही सच्चा दरबार है।
खुशियाँ मनांदा पया सारा संसार है।

☼ गाना ☼

(बतर्ज—राधे श्याम)

दिन और महीने बीत गये,
इस साल के लाल दयाल हुए।
लील अद्‌भुत देख देख,
थे माता पिता निहाल हुए।
कई बार तो देखा माता ने,
उन्हें शंख चक्र धारण करते।
बिस्तर पे गोदी पलने में,
कई देखे रुप उन्हें धरते।
कभी भक्त बने भगवान बने,
कभी रोते और मुस्काते थे।
कभी मस्त मलंग पड़े रहते,
कभी अलख अगोचर गाते थे।
कई बार रात को माता ने देखा इक फनियर आता है।
सर पर छाया फन से करता, चरणों में सीस झुकाता है।
फिर हौले हौले रींग रींग, पलने की परक्रमा लेता है।
फिर झूम झूम कर मस्ती में, जाने कहां चल देता है।
अद्‌भुत लीला करते थे बावा लाल दयाल।
बीते बचपन के तभी ऐसे आठों साल।

इक दिन हमजोलियों को संग ले जंगल में गऊंए चराने लगे।
इक दरख्त के नीचे बैठ गये, और लीला नई दिखाने लगे।

खुद भेष बना ब्रह्मचारी का,
बच्चों को चेले बना लिया।
फिर ईन्टों के आसन पे बैठ.
उन सब को कुछ उपदेश दिया।

करते करते उपदेश, समाधि में फौरन ही लीन हुए।
चुपचाप इन्हें बैठा देखा, बालक सारे गमगीन हुए।
सब रोते घर को भाग गए, रह गये अकेले लाल हरि।
तब शेष नाग ने बावा जी के, सर पर छाया आन करी।

उस जंगल में थी धूप कड़ी,
और समय दोपहर का आया था।
इक वृक्ष घना था उसी जगह,
जिस का वहां फैला साया था।
श्री लाल दयाल की करनी से,
साया भी जगह से टला नहीं।
मानों दर्शन को खड़ा रहा.
सूरज भी आगे ढला नहीं।

इतने में साधुओं की मण्डली, फिरती फिरती उस जगह आई।
श्री स्वामी चेतन दास जी ने, आंखों से लीला देख पाई।

इक लहर खुशी की चेहरे पर,

झट आई और मुस्काने लगे।

श्री लाल दयाल को देखे तभी,

साधुओं से यूं फरमाने लगे।

जिस की थी बड़ी तलाश मुझे,

वो लाल अमुल्ला पाया है।

यह लड़का नहीं यह साक्षात,

भगवान भूमि पर आया है।

इस को मैं शिष्य बनाऊंगा, दुनियां में यश फैलाने को।
यह बन कर लाल दयाल आया, संसार के कष्ट मिटाने को।
मैं अद्भुत चक्षु दे इसको, हृदय में ज्ञान जगा दूंगा।
इस भक्त को अपनी भक्ति से देखो भगवान बना दूंगा।
इतना कह कर स्वामी जी, जल का किया संचार।
आगे लाल दयाल जी, ओम का शब्द उचार।

देखा साधु मंडली को जब,

उठ प्रेम सहित प्रणाम किया।

श्री स्वामी चेतन जी ने तब,

हृदय से आर्शीवाद दिया।

साधु मण्डली में बैठे जब स्वामी ने कौतक दिखलाया।
चावलों को आज पकाना है, पानी लाओ यह फरमाया।
मिट्टी का बर्तन पानी और चावलों से भरकर मंगवाया।

पाओं का चूला बना लिया और बर्तन उस पर रखवाया।

योग अग्नि को प्रचन्ड किया,

चावल पक कर तैयार हुए।

साधुओं के जी प्रसन्न हुए,

जो भूख से बेजार हुए।

आखर बर्तन को तोड़ दिया,

बच्चे को देखा नजर भर कर।

और भक्ति में मग्न रहो,

हुए अर्न्तध्यान यही कह कर।

श्री लाल दयाल ने बर्तन के,

टुकड़ों को जल्दी उठाए लिया।

जो चावल तीन लगे रह गये,

उस सहित प्रशाद को खाए लिया।

खाते ही गुरु की प्रशादी देखो कैसा कल्याण हुआ।
खुल गए कपट वह हृदय के झट पैदा ब्रह्म ज्ञान हुआ।
अलमस्त निगाहें रंग भरी चेहरे पे लाली छा गई।
जिस कारण जग में आए हैं वोह बात याद तब आए गई।

साथी घबराए हुए पहुंचे पल में आन।
माता पिता भी संग थे लिया लाल पहचान।

माँ बोली बेटा बात है क्या कैसी खमोशी धारी है।
किस बात की तुम्हें उदासी है सच बोलो कसम हमारी है।

तब लाल दयाल जी मुस्काते,
बोले अब जी घबराता है।
जग के माया के बन्धनों को,
यह लाल तोड़ना चाहता है।

आज्ञा मुझ को दो मात पिता मैं गुरु के चरणों में जाऊं।
जिस लिए हुआ अवतार मेरा कर्तव्य वही कर दिखलाऊं।

✲ गाना ✲

(तर्ज—छोड़ो परिवार को)

मेरा व्याकुल है मन लागी मुझ को लगन।
वन को जाऊं सच्चे प्रीतम से प्रीत लगाऊं।
मेरे सतगुर थे जंगल में आए।
तीन चावल के दाने खिलाए।
ज्ञान अपना दिया मन को सीतल किया।
क्या सुनाऊं सच्चे प्रीतम से प्रीत लगाऊं।

दर्शनों की लगी मन में आशा।
मैं करुंगा बनों में निराशा।
छोड़ कह घर सभी जाऊं बन को अभी।
दर्शन पाऊं, सच्चे प्रीतम से प्रीत लगाऊं।

झूठी माया से नाता मैं तोड़ू ।
प्रीती सतगुर के चरणों में जोड़ू ।
चरणों में सर झुका, लूंगा सतगुर मना ।
'चमन' ज़ाऊं सच्चे प्रीतम से प्रीती लगाऊं ।

इतना कहकर श्री लाल जी घर से हुए रवान ।
जंगल जंगल फिर रहे करके गुरु ध्यान ।
मथुरा से कांशी गए फिर पहुंचे हरिद्वार ।
गुरु देव का न हुआ फिर उन्हें दीदार ।

दो वर्ष श्री लाल ने फिर फिर दिए बताए ।
आखर कुछ मन को मार कर पहुंच घर में आए ।

बूढ़े मां बाप की सेवा में,
अपने तन को लगा दिया ।
न फसे जगत की ममता में
पर धर्म पुत्र का निभा दिया ।
आखर मां बाप ने त्यागी देह,
तो पैदा अति वैराग हुआ ।
श्री लाल दयाल का आज शुरु,
दुनियां में सच्चा त्याग हुआ ।
जो कुछ था घर में लुटा दिया,
न साथ में ली इक पाई भी ।

गुरु खोज में घर से निकल गए,
जंगलों में जा के दुहाई दो।

हे गुरुदेव अब तो मेरे सर पर ना कोई कर्ज रहा।
दुनियां के सब नाते छूटे न सेवा का कुछ फर्ज रहा।
न मात रही न पिता रहे न बन्धु कोई हमारा है।
मेरी इस डोलती नय्या की सतगुर अब तूं ही सहारा है।
स्वामी अब तेरी खोज में ही यह जीवन भेंट चढ़ा दूंगा।
मिल जाओगे तो अच्छा है वरना मैं प्राण गवा दूंगा।

स्वामी चेतन दास जी सतगुरु जानी जान।
जल्दी अपने लाल की ली अवाज पहचान।

झट प्रगट हुए दर्शन देने और प्रेम से गले लगा लीना।
कर कृपा दया की दृष्टि से हृदय में ज्ञान बढ़ा दीना।
विधि सहित किया चेला उनको अपनी सब शक्ति भी दे दी।
आशीश भी दी करामात भी दी भगवान की शक्ति भी दे दी।
सब तीर्थ करवाए उन को सब जगह ले जाते थे।
भक्ति और योग के भेद उन्हें सारे समझाते जाते थे।

कुछ दिनों में ही सतगुर ने उन्हें,
अपनी शक्ति से निहाल किया।
सब भेद फकीरी के बतला,
करनी से माला माल किया।

कृपा दृष्टि से कर दिया लाल को आप समान।
कोट कांगड़े से हुए सतगुर अर्न्तध्यान।
गुरुदेव के बिछड़ते मन में कुछ घबराय।
तभी सतगुरु के वचन याद लाल को आय।

कि जग के नाते झूठे हैं इक सच्चा नाता राम का है।
सब आसरे इक दिन टूटेंगे बस लख सहारा नाम का है।
श्री राम को सिमरन कर हर जगह फैलाओ भक्ति को।
सेवक बनकर श्रीराम के तुम हर जगह दिखलाओ शक्ति को।
दुनियां को राम की शरण में ला सुख के भण्डारे भर देना।
गांव गांव में फिर फिर कर उपदेश राम का कर देना।

मान इसी उपदेश को सच्चे लाल दयाल,
फिर फिर कर संसार को करने लगे निहाल।
भ्रमण करते आ गये सहारनपुर के पास,
आध मील की दूरी पर करन लगे निवास।

कुछ दिनों में ही हिन्दू मुस्लम दर्शन करने वहां आने लगे।
कहते हैं अपनी भावना के अनुसार सभी फल पाने लगे।
महाराज दयाल योग बल से प्रातः नित गंगा जाते थे।
लोगों को सहारनपुर में भी हर समय नज़र वो आते थे।
श्री लाल दयाल ने लाखों ही सिद्धियां वहां पर दिखलाई।
लोगों ने उनकी सेवा कर मुंह मांगी मुरादें भी पाई।

वहां लंगर आम हुआ जारी जहाँ लाल दयाल जी रहते थे।
हिन्दू मुस्लम सब खाते थे मिलता था वही जो कहते थे।
रहता न कोई भूखा प्यासा बावा के भरे भण्डारे थे।
श्री लाल दयाल के सभी जगह बोले जाते जैकारे थे।
अपने तप के बल को इक दिन श्री लाल ने शक्ति दिखलाई।
गंगा महारानी भक्ति बस बावा के कमंडल में आई।
तब कुन्ड बनाकर इक पक्का उसमें वो गंगाजल डाला।
अपनी सिद्धि से डेरे का भी रुतबा कर दीना आला।

दूर दूर से लोग तब दर्शन करने आए,
करते थे अस्नान वो कुन्ड में खुशी मनाए।

लाल द्वारा नाम से मशहूर अस्थान,
जिसके दर्शन मात्र से ही होवे कल्याण।

सौ साल के बाद तब मन में मौज समाए
छोड़ सहारनपुर को तब गए पंजाब में आए।

किर्ण नदी कलानौर के, तट पर डेरा ला,
लग गए घोर तपस्या में, होकर बे-परवाह।

चारों वर्णों ने कलानौर में आपको सीस झुकाया था।
यहां ध्यानदास इक भक्त प्रभु का आप ने शिष्य बनाया था।
खुश होकर उसकी सेवा से गुरुदेव ने आज्ञा फुरमाई।
ढूंडो एकान्त जगह कोई जहां बैठ तपस्या करें भाई।

तब ध्यानदास जी ने खोजा गुरु कृपा से टीला भारी।
जो पृथ्वी से कुछ ऊंचा था मानों हो छोटी सी पहाड़ी।
श्री लाल को जगह पसन्द आई जंगल में मंगल कर दीना।
अनन्द सहित श्रीलाल दयाल आसन यहां अपना घर दीना।
कहते हैं किसी जमाने में यह टीला किला कहलाता था।
विराट नाम था किले का राजा रेव यहां हुक्म चलाता था।
दुनियाँ को गर्दश ने राजा के राज को जब बर्बाद किया।
तब भूत प्रेतों ने आकर, इस टीले को आबाद किया।
आखर श्रीलाल दयाल जी ने सारा नक्शा पलटाया था।
अपनी भक्ति की शक्ति से इस जगह को स्वर्ग बनाया था।

लाल दयाल को दया से आई वहां बहार।
बियाबान भी हो गया हरा भरा गुलजार।

बोऊली भी बनी तालाब बना कुटिया से माड़ी बनवाली।
सबसे पहले इक आसन और कुएं की चठ्ठ भी करवाली।
फिर सिद्धि सेवकों की खातर, आराम के कुछ स्थान बने।
फिर इर्द गिर्द बसने वालों के, भी इस जगह मकान बने।

ऐसे शुभ स्थान पर किया तभी विश्राम।
ध्यान दास के कारने, रखा ध्यानपुर नाम।

इसी जगह पर सतगुर बावा लाल दयाल।
बखशा बाईस चेलों को शक्ति और जलाल।

महाराज का चेला इक काँशी राम प्रधान।
बाग नौ लक्खा सौहदरे, डेरा कीना आन।

वह सन्त पीर कामल फकीर श्री बावा लाल का साथी था।
प्रधान चेला महाराज का था, तपसी था और ज्ञानी था।

एक समय की बात है, चेले सब गुणवान।
बैठ तालाब के किनारे वो, करते थे गुरु ध्यान।

सिद्धि नगर पण्डोरी के उस जा पहुंचे आन।
एक नाम नारायण था, दूसरे थे भगवान।

☼ गीत ☼

(बतर्ज—हरि हर)

लगे देख चेलों की सिद्धि जताने
वो आए थे भक्तों का बल अजमाने।

पूछा हो तुम कौन चेले हो किसके,
करो नाम जाहर हो तुम शिष्य जिसके।

तो बोल सभी वैष्णव रामा नन्दी,
हमारे गुरु लाल दयाल आनन्दी।

उन्हीं के सदा बैठे गुण गा रहे हैं,
वोही भक्ति मार्ग को दिखला रहे हैं।

इन्हीं की कृपा से यह धूनी रमाई,
इन्हीं की कृपा से यह पदवी है पाई।

तो भगवान ने परीक्षा लेनी जो चाही,
सरोवर में छोटी सी सूई गिराई।

कहा लाल करनी कुछ तो दिखाओ,
सरोवर की तह से यह सूई तो लाओ।

तो इक चेले ने उठ के हिम्मत दिखाई,
कहा बैठो सूई भी ले जाओ भाई।

यह कह कर धरा ध्यान तब लाल जी का,
पुकारा तभी नाम दयाल जी का।

नहीं भक्ति का हम को अभिमान कोई,
नहीं अपनी करनी का भी मान कोई।

है बे आसरों को तुम्हारा सहारा।
तूं ही डूबती नय्या का किनारा।

परीक्षा कठिन अपनी ली जा रही है,
तेरे नाम को लाज अब आ रही है।

नहीं हम में ताकत कि सूई निकालें,
नहीं हम में शक्ति कि शक्ति दिखालें।

मगर आप के नाम को लाज आए,
यही तो है दुःख जो सहा न ही जाए।

तेरा नाम लेकर मैं डुबकी लगाऊं।
तुम्हारी दया से मैं सूई को लाऊं।
यह कहकर तभी कूदा तलाब में वो।
गया पहुंच फौरन आब में वो।
श्री लाल जी ने दिखाई वह माया।
कि चेला उठा ढ़ेर सूईयों का लाया।
कहा अपनी सूई को पहचानियेगा।
गुरु लाल की शक्ति को मानियेगा।
अचम्बे में तब सन्त पिन्डोरी आए।
हों प्रसन्न तब बचन मुंह से सुनाए।
गुरु लाल की करनी जग से निराली।
है गद्दी यह संसार में शक्तिशाली।
जो इन की शरण में आ जाएगा।
वह मुक्ति सर्व सिद्धि पा जाएगा।
भक्ति ने प्रभाव से, बावा लाल दयाल।
जगत के कोने-२ में फैला नाम विशाल।
दिल्ली में उन दिनों था शाहजहान का राज।
उसी का सिक्का चलता था वो ही था महाराज।

—...—

☼ पंजाबी बोली ☼

(वतर्ज—इक वार दी कथा सुनावां)

इक वारी कश्मीर सैर नूं कीती शाह त्यारी।
दारा शिकोह फकीर करीम ते नाल सी लशकर भारी।
शहर सोहदरे देखो फौजां कीते आन उतारे।
एधर बावा कांशी राम जी पहुंचे सन्त प्यारे।
नौलक्खे विच डेरा लाके लग्गे करन ध्यान।
खाली जगह करावन खातर नौकर सारे आन।
साधु मस्त मलंग सी बैठा बावा लाल धिआ के।
दुनियां दे मालक नाल अपने दिल दी तार मिला के।
हौंसला न जद पया सिपाहीयां दा मन विच घबराए।
सारी गल सुना के दास शाह नूं नाल लिआए।
दारा शिकोह ने देखया आके साधू जी दा जलाल।
होली होली कैंहदा सी जै बावा लाल दयाल।
नजर उठा के वी न देखया कौन बादशाह आया।
ऐसा अपने मन नूं चरणा, विच गुरु दे लाया।

सच्चे सतगुरु दे चेले दा देख के नूर निराला ।
हत्थ जोड़ के करे बेनती, शाह कहावन वाला ।

अपने ओस पीर दे सानूं देह दर्शन करवाई,
जिसदे कोलों तूं वी चढ़दी कला सवाई पाई ।

कांशीराम जी कर कृपा मुंह तों ए फरमाया ।
लालदयाल गुरु है मेरा, सब थां जिसदी माया ।

बिन तकदीर दीदार मिले न लक्खाँ यत्न बनाईए ।
बिन कर्मा दे बावा लाल जी सतगुरु किस तरां पाईए ।

दारा शिकोह ते शाहजहां ने कीती जल्द त्यारी,
ध्यानपुर दे विच आ पहुंचा लै लशकर सरकारी ।

दारा ने सतगुरु सच्चे दा आ के दर्शन पाया ।
रखी भेटा हीरे जवाहर जो सी नाल लिआया ।

देख के ओ अनमुल्ले हीरे हस्से लाल दयाल ।
बोले एनी दौलत पाके फिर वी रह्यों कंगाल ।

कूड़ा कंकर इक्ठ्ठा करके फिरना ए भरमाया,
मिट्टी दे विच लाल अमुल्ला नज़र ना तैनूं आया ।

बर्कतां ओसे लाल दियां ने जो अन्दर पया बोले,
दीन दियाल जो बन के सब दे घट दे नेत्र खोले ।

ना ऐह रहनी बादशाही न रहनी हुसन जवानी ।
खोल के अक्खां देख बन्दया एह आलम है फानी ।
साडे किसे वी कम नहीं एह तेरे कच्चे मोती ।
लाल दयाल दे हृदय विच जगदी सच्ची ज्योती ।
एनाँ कहके बावा लाल ने अपनी नजर फिराई ।
देख के दुनियां दंग रह गई माया जो दिखलाई ।
कूड़ा कंकर ईट्टाँ पत्थर जो वी सामने आया ।
इक नजर नाल देखदियाँ ई सोना सभी बनाया ।
आके अपनी मौज दे अन्दर बोले बे परवाह ।
असीं तां सच्चे दास ओसदे जो शाहवाँ दे शाह ।
जिसदी बखशिष नाल बादशाह तूं वी हुक्म चलावें ।
काहनूं ओसदे दासां दी तूं करणी हुन अजमावें ।
एह है लाल दयाल दी गद्दी ऐथे थोड़ न कोई ।
भरे भंडारे रैंहदे हरदम चल्ले रब्ब रजाई ।
देख के करनी पीर सच्चे दी शाह ने सीस नवाया ।
बावा लाल ने कृपा करके सारा भरम मिटाया ।
आओ सच्चे सतगुरु दे चरणां विच सीस नवाइये ।
देख दलिद्र दूर होन गे प्रेम नाल जो गाइये ।

...

छटा अध्याय

बावा लाल दयाल दी महिमा की की खोल सुनावां।
करनी वाले सतगुरु मेरे मैं बलिहारी जावां।

जिस ते कृपा करन लाल जी हो के आप दयाल।
भक्ति दी दौलत उसनूं करदे माला माल।

चेला इक जगदीश दास मेरे सतगुरु दा आया।
इक पिण्ड विच भिक्षा कारण उसने फेरा पाया।

अग्गे वी उस पिण्ड विच, सन भिक्षा मंगन जांदे।
इक ब्राह्मणी दे घर दी नित्त लस्सी पीके आंदे।

प्रभु दी करनी गऊदा बछड़ा देखो स्वर्ग सिधाया।
एधर एह जगदीश दास, माई दे द्वारे आया।

लस्सी खातर साधु जी ने, आके अलख जगाई।
दुःखी ब्राह्मणी रोंदी देखो, बाहर निकल के आई।

हत्थ जोड़ के आखे बाबा, खाली अज मुड़ जाओ।
मोया मेरी गऊ दा बछड़ा, न पए मन कलपाओ।

बाबा जी ने देख के बछड़ा, मुहों बोल सुनाया।
कैंहदा कौन है मुरदा होया, तेरी गऊ दा जाया।

बावा लाल दे नां नूं मन दे विच धिआके।
बछड़े ते जल सुटिया थोड़ा, विच मौज दे आके।

लाल दयाल की ;कृपा देखो जान बछड़े विच आई।
करामात एह देख ब्राह्मणी मन विच खुशी मनाई।
बाबा जी ताँ लैके भिक्षा, डेरे दे वल आए।
एधर देखो सच्चे रब्ब ने कौतक की वरताए।

ओसे पिंड विच शाहूकार दा मुन्डा इक सिआना।
देवयोग दे नाल जगत तों कीता ओस चलाना।
शाहूकार ते उसदी पत्नि रो रो देन दुहाई।
ब्राह्मणी सुन आवाज़ रोन दी ओथे दौड़ी आई।

दिल विच आया दुख बड़ा, ते लग्गी ओ समझान।
अपने बछड़े दा ओ सारा लग्गी हाल सुनान।
बावा लाल दयाल दा चेला, जो कृपा दिखलाए।
जल दे छट्टे नाल जान ओ विच लाश दे पाए।

सुन के हाल ब्राह्मणी कोलों शाहूकार हरषाया।
लाश पुत दी गोदी लैके, कोल गुराँ दे आया।
आखे लाल दयाल जी ऐनां मुझ ते कर्म कमाओ।
नजर मेहर दी घर के, मेरा मोया पूत जवाओ।

पूरे सतगुरु बोले उसदे हुक्म नूं केहड़ा टाले।
ओहदी माया अग्गे हारे लक्खाँ करनियां वाले।
मुर्दा कदी न जिन्दा होवे मन तों ख्याल भुलाओ।
छडो शोक ते लाश एसदी विच शमशान जलाओ।

चरण पकड़ के शाहूकार ने आखया दियो असीस।
जिन्दा एहनूं करे तुहाडा चेला ओ जगदीश।
मोए बछड़े दे विच उसने अग्गे जान है पाई।
सानूं इक ब्राह्मणी ने है, सारी कथा सुनाई।

सुन के बावा लाल दयाल जी लगे करन विचार।
साधू नूं सिद्धि दिखलावन दा ही नहीं अधिकार।
साधू भक्ति जप तप करके किन्नी कर कमाई।
करनी अपनी नाल न मेटे कदी वो रब्ब रजाई।

सच्चे मालक अग्गे भावें रो रो करे पुकार।
अपने आपनूं कदी न समझे दुनियां विच अवतार।
सोच सोच के लाल दयाल जी मुहों वचन सुनाया।
गया है भिक्षा लैन को चेला अजे वापस न आया।

ऐने विच जगदीश जी आके, चरणी सीस नवाया।
दे आशीश दयाल बावा जी लाश तों खफन लाया।
फरमाया जगदीश प्यारे, करणी कुछ दिखलाओ।
इस लड़के दी लाश दे विच जान प्यारी पाओ।

हत्थ जोड़ जगदीश सिद्ध जी अक्खों नीर बहाया।
बोले आप ही जानी जान हो जानो अपनी माया।
मेरे विच न शक्ति कोई मैं हां दास अन्जाना।
मुरदे किवें जवाई दे ने, गुरु जी मैं की जाना।

दीन दयाल जी हस्स के बोले हुन न हो इन्कारी।
बच्छड़े नूं जद जिन्दा कीता क्यों न सोच विचारी।
एहनां दुखियां दा वी हुन तूं बेड़ा बन्ने ला दे।
अपनी करनी सारी इस सिद्धि दी भेंट चढ़ा दे।

हुक्म गुरां दा सुन के फौरन बावा लाल धिआया।
छट्टा दे के जल दा देखो मोया लाल जिवाया।
शाहूकार तां घर नूं तुरया करदा जै जै कार।
एधर बावा लाल जी आखन लग्गे नाल प्यार।

सिद्धि दिखला के तूं अपनी डाढ़ा कहर कमाया।
साधू होके रब्ब रज़ा दे नाल तूं मत्था लाया।
एनां कह के सच्चे सतगुर नैनों नीर बहा के।
सारी शक्ति खिच्ची उसदी छाती नाल लगा के।

तद बावा जगदीश जी अपनी सिद्धि ते पछता के।
मिट्टी दे चोले नूं छडया मुहों वाक्या सुना के।
बनी समाधी मेरी ते जो नाल प्रेम दे आवे।
निराहार इतवार अठ जो गोहा लेपन पावे।

दुख दरिद्र दूर होनगे ओस जीव दे सारे।
जेहड़ा बावा लाल दी जै जै मुहों सदा पुकारे।
कलयुग दे विच बड़ा कठिन है पर एह नेम निभाना।
खोटे कर्मां नाल रुकावट लाँदी आन बहाना।

देखो सतगुरु लाल दी महिमा 'चमन' निराली।
कोई स्वाली कदी नहीं मुड़दा इस गद्दी तों खाली।
आयो सारे रल के जै जै बावा लाल पुकारो।
श्रद्धा नाल धिआओ अपने बिगड़े कम सवारो।

✲ गीत ✲

आयो बावा लाल जी दी बोलो जै जै कार जी।
ध्यानपुर विच जिहदा सच्चा दरबार जी।
आसां ते मुरादां सब दियां जो पुजांवदा।
श्रद्धा नाल आया कोई खाली नहीं जांवदा।
साधु भेष विच जिन्हां लीता अवतार जी।
ध्यानपुर विच जिहदा सच्चा दरबार जी।
सच्ची सिद्धि देखो बाऊली विच ही दिखाई ए।
जल ताई बख्श दित्ती सारी ओ कमाई ए।
भूत प्रेत जादू टूना देवे जो उतार जी।
ध्यानपुर विच जिहदा सच्चा दरबार जी।
जै बावा लाल दी जो सदा ने पुकारदे।
दुनियां दे विच कदी दुःख न सहारदे।
लाल जी दयाल हो के बन दे रखवार जी।
ध्यानपुर विच जिहदा सच्चा दरबार जी।

गद्दी सच्चे सतगुरां दी जो निराली शान है।
गद्दी ते बराजन वाला सच्चा भगवान है।
ओहनां दे ही चरणां दा है 'चमन' सेवादार जी।
ध्यानपुर विच जिसदा सच्चा दरबार जी।

✲ गीत ✲

(बतर्ज—शाम आए नी)

ध्यानपुर दी मैं महिमा कहवां किस तरां।
एथे बर्कत मैं देखी कमाल दी ए।
एथे आन के खाली न मुड़दा कोई।
एह तां गद्दी ही लाल दयाल दी ए।
श्री लाल दयाल जी मुंहें तो कहे।
ओहनूं घाटा न जग विच कोई रहे।
करमा मारयां दे कर्म बन जांवदे।
एथे बदलदी किसमत कंगाल दी ए।
ध्यानपुर का ध्यान लगांदियां ही।
कट्टे दुख जांदे दर्शन पांदियां ही।
रैंहदी थोड़ न कोई आदियां ही।
हुन्दी कृपा मेरे लाल दी ए।
भूत प्रेत न जादू दा नुकसान है।
बोऊली विच जो कर लैंदा स्नान है।

मेरे सनगुरु दी करनी दा ए असर है.
जो निशानी पुरानी कई साल दी ए।
लिखां को हाल मैं इस स्थान दा,
जित्थे हर वक्त वासा है भगमान दा।
द्वारका दास महाराज दी शक्ति ही,
एस गद्दी नूं 'चमन' सम्भालदी ए।

✲ गीत ✲

तेरे दर का भिखारी हूं।

दया करो श्री लाल दयाल मैं शरण तुम्हारी हूं। तेरे...
दर्शन की भिक्षा मांगूं झोली कर्मों की फैला के,
सच्चे सतगुरु एक बार तो झलक दिखादो आ के।
मैं दुनियां की ममता में फंसा हुआ दुखारी हूं।
तेर दर का भिखारी ..
मुझ पापी को नाम की भिक्षा सतगुरु जी दलवाना,
दीन दयाल न अपने दर से खाली मुझे लौटाना।
मिला न तुम सा कोई फिरा मैं दुनियां सारी हूं।
तेरे दर का भिखारी...
इस दरबार की बर्कत का इक छीटां मुझ पर डालो।
विषय मिकार जगत की ममता मेरे दिल से निकालो।
मैं भी 'चमन' इन चरण कमल की प्रेम पुजारी हूं।
तेरे दर का भिखारी...

श्री १००८

श्री महन्त द्वारका दास जी

महिमा गुरु स्थान की मुझ से लिखी न जाये।
करता हूं मैं बेनती चरणों में सीस निवाय।
बावा लाल दयाल गुरु की महिमा भारी।
कैसे कह सकता है भला कोई संसारी।
श्री द्वारका दास जी ने जो दया दिखाई।
इन्हीं के चरणी सीस निवा कर कलम उठाई।
जो लिखवाया महाराज वो डाल लकीरें।
लिखा है यह स्तोत्र जो काटे सभी जंजीरें।
ऋद्धि सिद्धि दे कर सारे कष्ट मिटाए।
पाठ जो इस पुस्तक का श्रद्धा प्रेम से गाए।
इस पुस्तक को महाराज जी खुद लिखवाया।
जाने क्या गंवार 'चमन' सतगुरु की माया।
श्री द्वारका दास महन्त इस गद्दी वाले।
सच्चे सतगुरु पूरे भक्ति दे मतवाले।
उन्नी सौ अठविन्जा विच संसार च आए।
बुधवार बसन्त पंचमी खुशी दिखाए।

गणपत जी थे पिता और चम्पावती माता
गौड़ ब्राह्मण वंश मेरे सतगुर विख्याता।
जन्म नाम दामोदर दास आप कहलाए।
द्वारका दास नाम प्रभु भक्ति से पाए।

मां ने छोड़ा साथ आयु थी पांच साल की।
पिता से टूटा प्रेम दया थी लाल दयाल की।
होन हार बिरवान के चिकने चिकने पात।
बचपन में ही लागे आप सिद्धों के साथ।

गीत

(बतर्ज-हरि हर)

रहे साधु टोली के संग घूमते।
महा पुरुषों के चरणों को चूमते।
सुदर्शन जी से आपने लीनी दीक्षा।
प्रभु प्रेम मांगे की सच्ची वह शिक्षा।

सुदर्शन जी मोनी जी गद्दी विराजे।
पेशावर में थे आप सब साज साजे।
गुरु जी का फरमान पाया तो आये।
स्वभाव वंश मगर आप टिकने न पाये।

न रह सकते थे आप टोके बिना जो।
नियम के विरोधी को रोके बिना जो।

रहे नित कला में अभी मल न माना।
तो चुपके से ही आप हो गए रवाना।

कई वर्ष गुजरे पता कुछ न पाया।
कहीं से भी कोई सन्देश न आया।

इधर मोनी जी ने जभी की त्यारी।
तो देखो बावा लाल की महिमा भारी।

कि मिट्टी का चोला गुरु जी ने छोड़ा।
लगा मिलने बिछड़ा हुआ देखो जोड़ा।

मिली तार स्वामी व सेवक ऐसी।
कि सच्ची लगन में मिले शक्ति जैसी।

क्रिया कर्म के बाद दरबार आए।
वो लेने को सेवा सेवादार आए।

तभी जनता ने मिलके गद्दी बैठाया।
खुशी में हर इक ने यही गीत गाया।

......

✲ गीत ✲

धन्य भाग हमारे जो हमने दर्शन सतगुरु के पाए हैं।
सतगुरु के दर्शन पाए हैं।

श्री बावा लाल दयाल जी की महिमा फैलाने आए हैं।
इनकी दुनियां में है भक्ति बड़ी।
इन में है भक्ति की शक्ति बड़ी।

अपने गुरुदेव की सेवा का प्रभाव दिखाने आए हैं।
आये हैं कर्म कमाने को।
दया की दृष्टि दिखाने को।

हम दीन अनाथों के देखो, दुखड़ों को मिटाने आये हैं।
इन्हें मान नमानों का जानो।
हमदर्द गरीबों के मानो।

श्री द्वारका दास जी इस गद्दी की कीर्ति बढ़ाने आए हैं।
त्यागी हैं पूरे सन्त हैं यह।
इस गद्दी के महन्त हैं यह।

कर्तव्य महन्तों का यह 'चमन' जग को बतलाने आए हैं।

☼ गीत ☼

(बतर्ज-एथों उड़ जा भोले)

दिला चल ओथे चल वसियो जिथे सुख दा आवे साह ।
जिथे लोक ना मारन बोलियां न होवे सीना स्याह ।
जिथे जालम लहू न चूसदे दिल सज्जना दे दरिया ।
जिथे किसे नूं किसे दी गर्ज न सब रैंहदे बेपरवाह ।
दिला चल... ...

जिथे हर रंग विच हरि वसदा दित्ती दूई दी अलख मुका ।
जिथे दुखिया दुख नूं फोलदे कदी लैंदे ने दरद वंडा ।
जिथे मस्त दीवाने झूमदे, मुहों बावा लाल गा ।
जिथे देखके प्रेम प्यार नूं खुद नचदे सांवल शाह ।
दिला चल......

जिथे फिकर न खावन पीन दा जिथे रैंहदी कोई न चाह ।
जिथे होवे न उस्तित निंदया जिथे नाम दा वहे परवाह ।

जिथे दिल न डोले खांवदा जिथे वगदी प्रेम हवा।
जिथे रल सतसंगी बैठदे, दिंदे अपना आप भुला।
दिला चल......

जिथे चढ़दियां नाम खुमारियां जिथे दुःख दी कोई न जाह
जिथे मस्त मलंग मन खिचदे दिला मिठड़े बोल सुना।
जिथे पागल प्रेम रोंवदे मुहों कह कह बावा आ।
जिथे इक पल राम न विसरे जिथे एहो आवे सदा।
दिला चल......

जिथे गोबिन्द गोबिन्द गांवदे इस मन तार मिला।
जिथे छड के कपट व्यवहार नूं सब तुरदे सिधे राह।
जिथे 'चमन' न कोई माई बाप है जिथे कोई न भैन भरा।
जिथे राखा बावा लाल है मेरा शाहवां दा वी शाह।
दिला चल ....

......

(नित्य प्रति प्रार्थना किया करें)

प्रार्थना

जीवन सफल बना दो लाल जीवन सफल बना दो।
मन में जो भी विकार भरे हैं उन को दूर हटा दो।
निस दिन अपने चरण कमल की हम को लग्न लगा दो।
लाल जीवन......

प्रेम भरा हर इक से होवे यह वरताव हमारा।
हितकारी सब के बन जायें ऐसी सीख सिखा दो।
लाल जीवन......

निज प्राण से कबहूं न डोलें हो चाहे संकट भारी।
अपना कह कर साथ न छोड़ें ये ही नित सिखा दो।
लाल जीवन.....

हो आचार भी शुद्ध हमारे मन उज्जवल सुख पाये।
सतसंगी हो भाई भाई ऐसा मेल मिला दो।
लाल जीवन....

पर दु ख देख के दिल को दु:ख हो पर सुख होवे सुखारी।
हर इक दा कल्याण ही चाहे ईर्षा द्वेष मिटा दो।
लाल जीवन......

निन्दा उस्तति दोनों त्यागें क्षमाशील हो धारें।
चमन कर सत्संग सदा ही मन को क्रोध हटा दो।
लाल जीवन.....

आरती
श्री बाबा लाल दयाल जी की

ॐ जय बाबा लाल गुरो स्वामी जय श्री लाल गुरो ॐ जय।
शरण पड़े हैं आकर, अब उद्धार करो, ॐ जय श्री लाल गुरो।

सतयुग हंस राम जो त्रेता, द्वापर कृष्ण भये। स्वामी द्वापर..
कलियुग पतित उधारन, श्री लालदयाल भये ॐ जय श्री लाल गुरो।

सत्गुर लाल हैं जिनके, पूर्ण भाग किये स्वामी पूर्ण भाग किये।
गृहस्थी हो या वैरागी, वह सब मुक्त हुए। ॐ जय श्री

हरि गुरु में नहीं भेद, इसमें जो भेद करें। स्वामी इसमें जो भेद करे
वह अज्ञानी नर जो, जग में नहीं सुधरे। ॐ जय श्री लाल...

हम सेवक तुम सत्गुरु और न शरण कोई, स्वामी और न शरण कोई
संशय सभी मिटाओ, मन में है जोई। ॐ जय श्री लाल गुरो।

सब सेवक गुरु शरणों, पूर्ण आशा करो। सत्गुरु पूर्ण आशा करो।
अन्तर्यामो सत्गुरु, सब के पाप हरो। ॐ जय श्री लाल ..

मोह अज्ञान मिटा कर, पावन बुद्धि करो। सत्गुरु पावन बुद्धि करो
निर्मल भक्ति दे कर, हृदय शुद्ध करो। ॐ जय श्री लाल...

तुम्हारी आरती क्या कोई गावे किसमें है शक्ति सत्गुरु किसमें है शक्ति
विषय विकार मिटा कर, दियो चरणन भक्ति। ॐ जय श्री लाल...

हरि गुरु लाल की आरती, निशदिन जो गावे। सत्गुरु निशदिन जो गावे
कहत हरि चन्द सेवक, हरि भक्ति पावे। ॐ जय श्री लाल ..

.ी देव प्रकाश जी हाण्डा ने रामा आर्ट प्रेस, अमृतसर से छपवाई
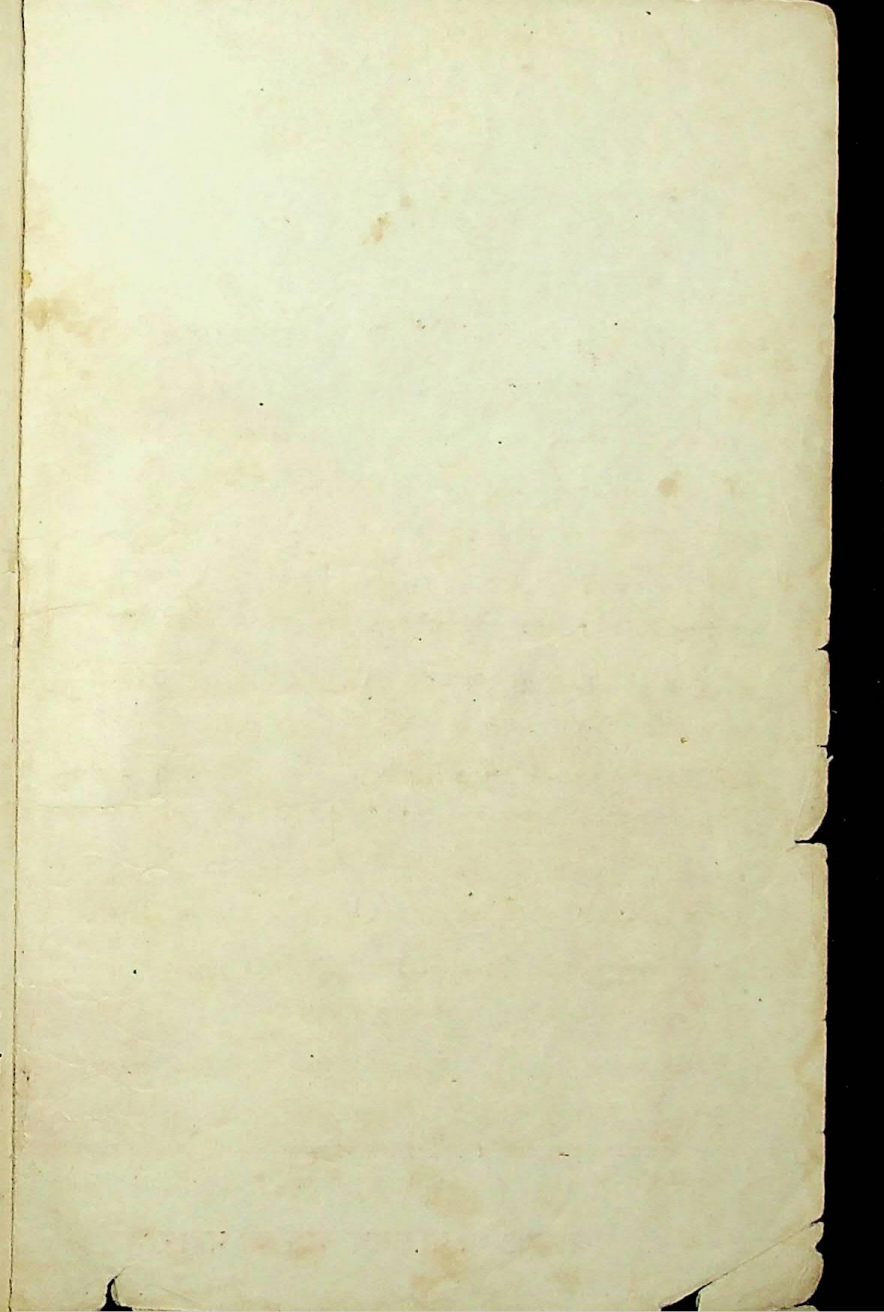
दरबार श्री ध्यानपुर

की 14वीं गद्दी के वर्तमान महन्त

श्री 108 श्री नारायण दास जी महाराज